

SMT. SUBASINI MISTRY

Smt. Subasini Mistry, the Founder of the Humanity Hospital (a Hospital catering to the needs of the poorest of the poor section of the society), governed by the Humanity Trust is the Life Trustee of the Trust. Smt Mistry,a visionary, is widely recognized not only in the different parts of the country but across the world for her exceptional and distinguished service in the field of social work.

2. Born on May 26, 1941, Smt. Mistry, an illiterate housewife dwelling in a remote village in West Bengal with her husband and four minor children lost her husband in his early 30s for want of medical treatment. He being the only earning member of the family, Smt. Mistry, the poor widow, having no other choice started working as a housemaid, a daily labourer, a vegetable vendor on the streets and what not to support the family. But in this gravest hour of grief she took a vow to build a hospital in the village where her husband used to live so that the poor and the needy could get the basic and timely medical support which her poor husband could not get.

3. Smt. Mistry's determination coupled with her motivation of helping the poor inspired her to meet all the challenges she faced in her life. From her very meagre earning she started saving bit by bit and in 1992 she bought about one bigha of land in her husband's village in Hanspukur. With the help of the villagers and ably supported by her youngest son Ajoy, who was inspired by Smt. Mistry to build a thatched where dispensary was set up in 1993. On the first day as many as 252 patients were treated by the doctors who volunteered to give sometime for free treatment. The foundation stone of the hospital, rightly named as the Humanity Hospital by Smt. Mistry, the epitome of humanity, was laid on 05/02/1995 and the construction started on 23/05/1995. On 09/03/1996, the then Governor of West Bengal inaugurated a 1000 sq.ft. building with 5 beds and the hospital started its new journey thereof. Since then the hospital has not looked back and with the able support of all sections i.e. society, the Humanity Hospital in Hanspukur, presently a 3 storied building with 45 beds besides ICU, OPD, 2 OTs, fully computerized Pathology, Radiology is continuing to provide service to the economically backward section of the society.

4. Smt. Mistry with the unstinted co operation and support of her youngest son Ajoy Kr Mistry has been the guiding force behind the second campus of the Humanity Hospital at Sunderban, West Bengal. The hospital started with a make shift arrangement in a tent during the devastating Aaila in 2009 on the playground of Shantigachi High School. Successively, on a piece of land donated to the Humanity Trust, construction of the hospital building started on 01/01/2013.Treatment of the patients in the hospital building started on 25/12/2013. The second campus of the Humanity Hospital is presently a 3 storied building with 25 beds for indoor patients besides having OPD, OT.

5. Smt. Mistry is the recipient of numerous awards and honours. To name a few are Real Heroes from CNN-IBN, Silver Awards from Harmony Foundation Mumbai, 24 Ghanta Ananya Samman 2012,Swami Vivekananda Award-RKM Delhi in 2012, Service Above Self from Rotary International. In 2017, Smt. Mistry was declared Winner of Women Transforming India Award 2017 an initiative of My Gov/NITI Aayog/United Nations in recognition of her outstanding contribution for empowering communities and transforming India.



श्रीमती सुबासिनी मिस्त्री

श्रीमती सुबासिनी मिस्त्री ह्युमनिटी अस्पताल की संस्थापक हैं (यह अस्पताल समाज के दरिद्रतम लोगों की चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करता है), यह ह्युमनिटी ट्रस्ट द्वारा चलाया जा रहा है और आप इस ट्रस्ट के आजीवन ट्रस्टी हैं। आप एक द्रष्टा हैं जो सामाजिक कार्य के क्षेत्र में असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए न केवल देश के विभिन्न भागों में बल्कि पूरे विश्व में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं।

2. आपका जन्म 26 मई 1941 में हुआ, अनपढ़ गृहिणी के रूप में आप अपने पति और चार छोटे बच्चों के साथ पश्चिम बंगाल के दूरस्थ गांव में रहती थीं, चिकित्सा उपचार नहीं मिल पाने के कारण 30 वर्ष की आरंभिक आयु में आपके पति का देहान्त हो गया। वह परिवार का एकमात्र कमाऊ सदस्य था, इसलिए आपने गरीब विधवा होते हुए कोई और विकल्प नहीं होने के कारण आया, दैनिक श्रमिक, सड़कों पर सब्जी बेचने तथा और कई तरह के माध्यमों से कार्य करके अपने परिवार को चलाना शुरु किया। लेकिन इस दु:खद घड़ी में आपने उसी गांव में अस्पताल बनाने की शपथ ली जहां आपके पति रहते थे, ताकि गरीब और जरूरतमंद लोग वह मूलभूत तथा समय पर चिकित्सा सहायता प्राप्त कर सकें जो आपके निर्धन पति को नहीं मिल पाई थी।

3. गरीबों की सहायता की प्रेरणा और निश्चय ने मिलकर जीवन की सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए आपको प्रेरित किया। अपनी अल्प कमाई से आपने थोड़ी-थोड़ी बचत करनी शुरू कर दी और 1992 में आपने अपने पति के गांव हंसपुकुर में एक बीघा जमीन खरीद ली। गांव वासियों की सहायता और आपसे प्रेरित आपके सबसे छोटे बेटे के कुशल सहयोग से एक छप्पर डाल लिया जहां 1993 में दवाखाना स्थापित किया गया। पहले ही दिन 252 से अधिक मरीज़ों का उपचार उन चिकित्सकों द्वारा किया गया जिन्होंने नि:शुल्क उपचार हेतु स्वैच्छा से कुछ समय-दान किया था। अस्पताल की आधारशीला, आपके द्वारा दिए गए सटीक नाम ह्युमनिटी अस्पताल, मानवता का प्रतिमान, के रूप में दिनांक 05/02/1995 को रखी गई। इसका निर्माण कार्य 23/5/1995 में आरंभ हुआ। दिनांक 09/03/1996 को पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल ने 5 बिस्तरों वाले 1000 वर्ग फुट के भवन का उद्घाटन किया तब से इस अस्पताल की एक नई यात्रा आरंभ हुई। आज तक इस अस्पताल की तरक्की जारी है और समाज के सभी वर्गों अर्थात् समाज के समर्थ सहयोग से हंसपुकुर का ह्युमनिटी अस्पताल वर्तमान में 3 मंजिला भवन के रूप में और 45 बिस्तरों सहित व इसके अतिरिक्त आईसीयू, ओपीडी, 2 आप्रेशन थियेटर, पूर्णत: कम्प्यूटरीकृत रोग विज्ञान, विकिरण-चिकित्सा विज्ञान सहित समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों को सेवा प्रदान कर रहा है।

4. आप अपने सबसे छोटे लड़के श्री अजय कुमार मिस्त्री के सम्पूर्ण सहयोग और सहायता से सुन्दर बन, पश्चिम बंगाल में ह्युमनिटी अस्पताल के दूसरे कैम्पस के निर्माण के पीछे मार्गदर्शी ताकत रही हैं। यह अस्पताल वर्ष 2009 में आए विध्वंसक आइला के दौरान शांतिगाची उच्च विद्यालय के खेल के मैदान में अस्थाई टैन्ट व्यवस्था के माध्यम से शुरू हुआ। बाद में ह्युमनिटी ट्रस्ट को दान किए गए भूमि के एक टुकड़े पर दिनांक 01/01/2013 को अस्पताल भवन का निर्माण कार्य आरंभ हुआ। दिनांक 25/12/2013 को इस अस्पताल में मरीजों का उपचार आरंभ हुआ। ह्युमनिटी अस्पताल के दूसरे कैम्पस का वर्तमान में 3 मंजिला भवन है और इसमें अन्तरंग रोगियों के लिए 25 बिस्तर हैं, इसके अतिरिक्त ओ.पी.डी और ऑप्रेशन थिएटर भी हैं।

5. आपको बहुत से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हैं। उनमें से कुछेक सीएनएन-आईबीएन द्वारा दिया गया 'रीयल हिरोज', सद्भावना प्रतिष्ठान मुम्बई का 'सिल्वर अवार्ड', 24 घंटा अनन्य सम्मान 2012, 2012 में रामकृष्ण मिशन का स्वामी विवेकानंद अवार्ड, रोटरी इन्टरनैशनल का 'सर्विस अबव् सेल्फ' हैं। 2017 में, आपको सामुदायिक सशक्तिकरण और भारत में परिवर्तन लाने में आपके उत्कृष्ट योगदान को मानते हुए आपको माय गवर्नमेंट/नीति आयोग/संयुक्त राष्ट्र की एक पहल वाला भारत में परिवर्तन लाने वाली महिलाओं के लिए अवार्ड, 2017 की विजेता घोषित किया गया।